एनकाउंटर, जालंधर

शुक्रवार 01 अप्रैल , 2011 | 5

अमृतसर के निवासियों को क्रॉनिक गैर-संक्रामक बीमारियों (एनसीडी) से सचेत करने के लिए गोल मेज सम्मेलन

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पीटल, अमृतसर; क्रॉनिक केयर फाउंडेशन और इम्पैक्ट सीनियर लिविंग स्टेट्स (आईएसएलई) की संयुक्त पहल से शहर के अधिक कमजोर वर्गो - महिला समूहों और वरिश्ठ नागरिकों - को क्रॉनिक गैर-संक्रामक बीमारियों (छब्ब) के बारे में जागरूक करने का लक्ष्य

अमृतसर, हरपाल सिंह पाल

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पीटल, अमृतसर; क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन और इम्पैक्ट सीनियर लिविंग स्टेट्स (आईएसएलई) ने षहर में एक गोल मेज़ सम्मेलन का आयोजन किया। इसका लक्ष्य विचार गोश्ठी और लोगों की राय जानने के माध्यम से भारत के बुजुर्गों, युवाओं और महिलाओं के बीच बीमारी के बोझ, खतरे और एनसीडी की रोकथाम की सही समझ विकसित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा से जुड़े और उससे बाहर के भी सभी भागीदारों को बचाव मुहिम में षामिल करना है। इसके अलावा, सम्मेलन का उद्देष्य कमजोर आबादी (महिला समूहों और वरिश्ठ नागरिकों) को इस तरह मजबूत बनाना है कि ऐसे लोग अपने स्वास्थ्य की बेहतरी की मांग कर सकें, स्वास्थ्य सेवा से जुड़े लोगों से सकारात्मक संवाद बना सकें और अपनी बीमारी की उपचार व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी भी निभा सकें। क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रत्ना देवी ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा, ''गैर-संक्रामक बीमारियां व्यक्ति विषेश ही नहीं, पूरे समाज को दीन-हीन बना देती हैं। इसलिए अत्यंत जरूरी है कि हम यथाषीघ्र इन बीमारियों की रोकथाम और इलाज की सर्वश्रेश्ठ प्रचलित पद्धतियों के बारे में लोगों को जागरूक करें। देष को एनसीडी के बोझ से आजाद करने के लिए जरूरी है कि समाज के सभी वर्गों जैसे कि सार्वजनिक संगठन, चिकित्सा पेषे से जुड़े लोग, मीडिया और समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लोग अर्थात् महिलाएं और वरिश्ठ नागरिक इस काम में योगदान दें। क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन का प्रयास सामुदायिक स्तर पर जागरूकता लाना, और राश्ट्र एवं राज्य स्तर पर सेवा देने वालों के साथ-साथ संसाधन जुटाने की मांग करने वालों में जागरूकता लाना है। यह परिचर्चा इस मुहिम की दिषा में एक उल्लेखनीय कदम है।'' फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पीटल, अमृतसर के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एच.पी. सिंह और उसी अस्पताल के मुख्य हृदय रोग विषेशज्ञ सलाहकार डॉ. अरुण चोपड़ा ने वरिश्ठ नागरिकों की नाजुक स्थिति और बुजुर्गों की देखभाल के बारे में बताया, ''बुजुर्गों की देखभाल का मकसद बढ़ती उम्र की वजह से होने वाली बीमारियों की रोकथाम या उन्हें यथासंभव टालना है ताकि बुजुर्गों को मृत्यु से पहले लंबे समय तक बीमारी न झेलना पड़े और वे स्वस्थ जीवन का आनंद ले सकें। बुजुर्ग मरीजों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए अधिक व्यापक और 'इंटर-डिसीप्लिनरी एप्रोच' आवष्यक है क्योंकि उनकी समस्याएं अक्सर कई रूपों में प्रकट होती हैं जैसे कि जैविक, सामाजिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक। जाहिर है, केवल चिकित्सा पेषे से जुड़े लोग ध्यान दें तो समस्या का अधूरा हल मिलेगा। बुजुर्गों की देखभाल में चिकित्सा सेवा के साथ सामुदायिक देखभाल का संयोग जरूरी है। वैसे तो भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था में खुद मरीजों के चिकित्सा सेवा के लिए अस्पताल आदि पहुंचने का चलन है जो बुजुर्ग नहीं कर सकते। ऐसे में जरूरत है अधिक सक्रिय हेल्थ टीम की जो गांव-देहातों और झुग्गी बस्तियों में जा कर निःषुल्क उपचार की व्यवस्था करे और बुजुर्गों को उनके घर पर ही स्वास्थ्य संबंधी सलाह दे। यह खास कर उनके लिए बेहद जरूरी है जो चलने-फिरने से लाचार हैं। यह टीम बुजुर्गों की व्यापक जांच-परीक्षण को अंजाम दे सकती है ताकि बुजुर्गों की चिकित्सकीय समस्याओं के अलावा मनोवैज्ञानिक समस्याओं जैसे डिमेंषिया और डिप्रेषन का पता चले। यह भी पता चले कि उनके हाथ-पांव में कितनी ताकत है (यह उनके गिरने या अर्थराइटिस का खतरा भांपने के लिए जरूरी है); वे किस परिस्थिति में हैं, नियमित व्यायाम करते हैं या नहीं (जो कई बीमारियों का एक इलाज है); घर का परिवेष कैसा है (गिरने का खतरा तो नहीं); और स्वास्थ्य सेवा सुलभ है या नहीं। दरअसल अमीर देषों में स्वास्थ्यकर्मियों ने खुद आगे बढ़ कर यह रास्ता अपनाया है और यही मूल कारण है कि वे बुजुर्गों की देखभाल में सफल हैं। इम्पैक्ट सीनियर लिविंग स्टेट्स प्रा. लि. के मुख्य परिचालन अधिकारी श्री अमन बत्रा के अनुसार, ''उम्र बढ़ने के साथ वरिश्ठ नागरिकों की नाना-प्रकार की समस्याएं भी बढ़ती हैं और एनसीडी (छब्ब) एक ऐसी ही समस्या है। छब्ब् की समस्याएं आम तौर पर जीवन के बाद वाले हिस्से में होती हैं जबकि छब्ब् गलत जीवनषैली जैसे षारीरिक गतिविधि की कमी, तम्बाकू के सेवन आदि की वजह से कम उम्र (बचपन) में ही षुरू हो जाती है। गौरतलब है कि भारत में जीवन प्रत्याषा (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) बढ़ने के साथ आषंका जताई जाती है कि बीमारी के बोझ के दृश्टिकोण से छब्ब् भारत में नंबर एक स्थान पर होगी। और फिर वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की आवष्यक देखभाल के बीच परस्पर एक गंभीर संबंध भी है। इसी को मद्देनजर रखते हुए आईएसएलई (वरिश्ठ नागरिकों के लिए भारत की पहली सेवा-सक्षम कम्युनीटी) ने फोर्टिस हेल्थकेयर को अपना हेल्थकेयर पार्टनर बनाया है और वरिश्ठ नागरिकों की जरूरतों को बखूबी समझते हुए उन्हें बेहतरीन सेवा देने पर केंद्रित है। हमारा लक्ष्य एक सेवा परिवेष तैयार करना है जिसमें आईएसएलई के सभी निवासियों को बेजोड़ सेवा मिले भले ही आपातकालीन स्थिति में गंभीर चिकित्सा सेवा की जरूरत हो या खान-पान के बारे में कोई मौलिक सलाह चाहिए हो।'' गोल मेज सम्मेलन के तहत विचार गोश्ठी और लोगों की राय के आधार पर एक एडवोकेसी पेपर तैयार किया जाएगा।